''फलों के आकार को बृहत् करने की प्राचीन भारतीय पद्धति''

राकेश कुमार यादव

आचार्य सुरपाल ने अपने ग्रन्थ 'वृक्षायुर्वेद' में, आचार्य वराहमिहिर ने 'बृहत्संहिता' में, आचार्य शुक्र ने शुक्रनीति में, अग्निपुराण तथा उपवनविनोद में फलों के आकार को बृहत् करने की अनेक–अनेक विधियों का उल्लेख किया है। आचार्य सुरपाल ने अपने ग्रन्थ वृक्षायुर्वेद में विभिन्न प्रकार के वृक्षों के फलों को बृहत् अर्थात् बड़ा करने की विधियाँ बताया है।

उपवनविनोद में विविध वृक्षों के फलों के आकार को बृहद् करने के उपायों का वर्णन किया गया है। उपवनविनोद के अनुसार– खर्जूर, बिल्व और लकुच की वृद्धि शुक्ल सरसों के उपचार से होती है। आम्र की सम्यक् वृद्धि तिल की खली के साथ धान की भूसी के जल प्रयोग से होती है।

आचार्य सुरपाल ने न केवल फलों के आकार को बृहत् करने की विधि का वर्णन किया है अपितु बीजरहितफल तथा वृक्ष पर लम्बे समय तक स्थिर रहने वाले उपाय का भी वर्णन किया है। आचार्य सुरपाल के अनुसार यदि किसी वृक्ष की जड़ के पास एक गर्त में मधुकपुष्प, कमल, शहद और मिश्री व यष्टि या मुलेठी की बनायी गोलियाँ रख दी जाए तो वह वृक्ष लम्बे समय तक स्थिर रहने वाले फल देने लगता है।